कोई भी अपनापन स्वार्थरहित नही होता

अकस्मात मेरी नजर नीना पर पड़ी।मै पव्लोस्काया हॉस्टल से अपने आखिरी सामानों के साथ प्रीअवराजेनस्की प्लोसाज लौट रहा था।आलवीना भी मेरे साथ थी।नीना बस के अन्तिम छोर पर एक सीट की हैन्डल थामे खड़ी थी.और हमारी तरफ देखे जा रही थी।मै पसीने से नहा उठा।शर्म और ग्लानि से मेरी नजरें तक न उठ पा रही थीं।मेरी चोरी पकड़ी जा चुकी थी।मेट्रो स्टेशन आने का नाम ही नही ले रहा था।नीना की नजरें मुझे बेंधती रही.पर वो हमारे समीप न आई।पता नही उसे कहॅा जाना था!वो विल्येवा मेट्रो पर न उतरी।बस से उतरने के बाद सिर्फ एक बार मै पलट कर बस की तरफ देखा।नीना बस के खिड़की की नमी साफ किये जा रही थी।आलवीना को भी विना हॅाथ मे हॅाथ डाले चलना ही नही आता था।मुझे अच्छी तरह पता था कि नीना बस के अगले स्टॅाप पर उतरकर दूसरी दिशा की वस लेकर वापस अपने घर चली जाएगी।मै तो एक चोर की तरह सरक कर अपना मुॅह छुपा लिया।अब उसे अपने निराशाओं से स्वयम लड़ना था।एक कमजोर धारा की तरह मै अक्सर मजबूत धाराओं के साथ मिलकर बहा.फिर मौका मिलते ही अकेले बहना चाहा।ये मै आज तक अपरोक्ष कर रहा हूॅ।

नीना से ये मेरी आखिरी मुलाकात नही थी।एक बड़े ही निर्णायक क्षण मे मैने मास्को छोड़ने का निर्णय ले लिया।आलवीना से मेरे सम्बन्ध न रहे।उसने मुझे निराशा के ऐसे घनघोर जंगल मे ले जा छोड़ा.जहॅा से वापस लौटने की एक संकरी सी भी पगडंडी मै आज तक नही ढूॅढ पाया हूॅ।

नीना मुझसे दो वर्ष बड़ी थी।वो थी तो मेरी सहेली.पर उसका व्यवहार मेरे प्रति हमेशा बड़ा उदार रहा।वो मेरे रूम पार्टनर अनातोले की बहन थी।वो चुवासकाया रिपब्लिक के एक छोटे से गॅाव असानोवा की रहने वाली थी।एक बार वो अपने भाई से मिलने मास्को आई थी।हमारी गर्मी की छुट्टियॅा चल रही थीं।मुझे भी मास्को आए एक वर्ष हो चला था।काम चलाऊ रसियन मै बोल लेता था।अनातोले के साथ मै भी स्टेशन गया था।हमे ज्यादे इन्तजार न करना पड़ा।स्टेशन की चूॅधियाती रोशनी मे एक चे एस एस आर नाम की ट्रेन प्लेटफार्म को रगड़ती रूकी।हम प्लेटफार्म के बीचोबीच खड़े थे।अनातोले की नज़र हर डिब्बे पर थी।मै तो बस उससे दवाय सुनने का इन्तजार कर रहा था।अचानक वो दवाय कहके एक डिब्बे की ओर लपका।मै अपनी जगह से हिला तक नही।भींड़ छॅट चुकी थी।एक डिब्बे के दरवाजे पर नीना एक लम्बे नीले रंग के स्कर्ट और एक बन्द गले के सफेद ब्लाउज मे एक अटैंची हॅाथ मे लिए खड़ी थी।अनातोले अपने एक हॅाथ से अपनी बहन की अटैंची सम्हाला और दूसरे हॅाथ से उसे डिब्बे से सीधा स्टेशन पर उतारकर उसके गले से लग गया।नीना के दोनो हॅाथ अपने भाई को भींचे हुए थे।उसका सर अपने भाई के कन्धे पर था।एक छोटे से गॅाव की लड़की पहली बार मास्को जैसे बड़े शहर मे आई थी।उसके लिए यहॅा सबकुछ नया था।वो थोड़ी घवरा भी रही थी।पूरे रास्ते वो अनातोले का हॅाथ न छोडी।कभीं कभीं वो मेरी तरफ झटके से देखकर मुस्करा देती थी।

अनातोले के ताऊ सपत्नी मास्को मे ही रहते थे।वो रिटायर हो चुके थे।नीना को लेकर हम उन्ही के पास गए।नीना की ताई ने पेस्ट्रिया बना रखी थी।हम रसोईघर मे जा बैठे।इस दो कमरे के मकान की खिड़कियॅा न जाने कितने वर्षो से न खोली गई थीं।मकान बेहद साफ सूथरा था.पर एक अजीब तरह की वास हर तरफ से आ रही थी।नीना की ताई बड़ी स्नेहमयी थीं.पर उसके ताऊ की बातों से मुझे ये लगा कि उन्हे विदेशी पसन्द नही हैं।अनातोले और नीना अक्सर बातचीत का विषय बदलना चाहते थे.पर अगला तो हिन्दुस्तान के गरीबी के पीछे ऐसा पड़ा कि मै एक बार तो झल्ला ही पड़ाःहिन्दुस्तान के गरीबी के अलावे आप हिन्दुस्तान के बारे मे और भी कुछ जानते हैं!गरीबी अगर आप को देखना ही है.तो इतनी दूर आप को जाने की जरूरत ही नही है।कभीं पदमास्कवा जाकर देख आइये।चालीस पैंतालीस किलोमीटर की बस बात है।फिर आपको पता लगेगा कि गरीबी का उच्चारण कैसे करते हैं।

मन ही मन बूढे को रसियन मे योप त्वोयो माचःतुम्हारी मॅा कीः गरिया कर मै उठ पड़ा।शाम का खाना मैने संजीदगी से टाल दिया।अनातोले मुझे बस के अडे तक पहॅुचाना चाहता था.मैने उसे मना कर दिया.पर नीना को टालना बड़ा मुश्किल था।बस आने से पहले नीना अपने ऐड्रेस बुक मे मेरा पता और टेलीफोन नम्बर लिख ली और दूसरे दिन टेलीफोन करने का वायदा भी किया।

नीना मास्को मे दस दिन रही।इन दस दिनो मे अनातोले से ज्यादा मैने ही उसे मास्को दिखाया।सुबह से शाम तक हम पार्ककुल्तुरी.लेनिनस्की गोरी .बेदेनखा के पार्को मे घूमने जातो थे।अक्सर मै एक नाव किराये पर लेकर नीना के साथ वोल्गा नदी मे मीलों दूर निकल जाता था।नीना को पिल्मीनि बेहद पसन्द थे।उसे मै रोज ही क्रासनीय प्लोसाज के एक रेस्तरॅा मे पिल्मीनि खिलाने ले जाता था।क्रासनीय प्लोसाज पर ही एक बार था.जहॅा हम घन्टो बैठे रेड वाइन पीते थे और आइसक्रीम खाते थे।उसके साथ मैने रसियन मे डब्ड एक हिन्दी फिल्म आम्रपाली भी देखी।मास्को मे नीना को मैने एक भी कोपेक खर्च करने न दिया।उससे मै अक्सर मेट्रो स्टेशनो पर ही मिलता था।उसके ताऊ ताई से मै बस एक बार मिला.जो मेरी उनसे आखिरी मुलाकात थी।नीना मास्को मे दस दिन रहकर वापस असानोवा चली गई।उसे स्टेशन छोड़ने मै ही गया था।ट्रेन आने से पहले वो विना किसी झिझक के मेरे मफलर ठीक करने लगी।विदा होने से पहले वो मेरे हाथ मे एक रैप्ड पैकेट देकर मेरे बाल बिखरा गई.गोकि उसे पता था कि मुझे बिखरे बालों से बड़ी घवराहट होती है।नीना की वापसी मुझे कई दिनो तक अखरती रही।मुझे उसकी बड़ी याद आती थी।विशेषकर तब जब मै उसका दिया स्वेटर और शापका पहनता था।असानोवा से वो आए दिन मुझे लिखती थी.जिसका जवाव मै तत्काल लिख दिया करता था।

मास्को मे मुझे नव्वे रूवल की छात्रवृति मिलती थी।इस नव्वे को बारह से गुणा करके एक हजार अस्सी रूपये की मासिक छात्रवृति पाने का दम्भ भरना मैने छ महीने बाद ही बन्द कर दिया था।मेरे लिए ये नव्वे रूवल बस नव्वे रूपये थे।हॅाथ खुले होने की वजह से मुझे पैसे की हमेशा ही तंगी रहती थी।महीने की छ तारीख के बाद मेरे पास बसों और मेट्रो के मन्थली टिकट के अलावे फोन करने के दो कोपेक तक न होते थे।फंसा भी तो कहा आकर फंसा!वापस भी लौटता तो कैसे!मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एन्ड सोशल वेलफेयर मे साईन किया गया दस हजार रूपये का बौन्ड एक नंगे तलवार की तरह मेरी ऑखो के सामने अहर्निश लटका रहता था।फिर घर वालों और रिश्तेदारों की टीका टिप्पणिया भी तो किसी जहर से बुझी बर्छी से कम न थीं।मुझे ये सात आठ वर्षो की तपस्या करनी ही थी।चाहे रोते कलपते हुए चाहे गाते बजाते हुए।

मै नही समझता.कि सोवियत यूनियन की अपेक्षा संसार के किसी दूसरे देश मे विद्दार्थियों का जीवन इतना गरीब और नारकीय होगा।भागा दौड़ी.तंगिया .पचपन अनुशासन.सैकड़ों प्रतिवन्ध.कटकटी ठंढ और मै क्या क्या गिनवाऊॅ!प्रिपरेटरी फैकल्टी के बाद अनातोले तो मिखलूखा मकलाया मे रह गया.पर

मुझे पव्लोव्सकाया के एक मनहूस हॅास्टल मे आना पड़ा।इस हॅास्टल मे अब मुझे अपने आगामी छ वर्ष बिताने थे।यहॉ मुझे तीन नए रूम पार्टनर मिले।मेरे रसियन रूम पार्टनर का नाम सिरयोजा था।उससे मेरी ठीक ठाक पटती थी।बाकी के दो बेनीन और पेरू के थे।इन दोनो को नाचने और चो...ने से कभी फुर्सत ही नही रहती थी।विकएन्ड मे हमारा कमरा कमरा नही रह जाता था,डिस्को बन जाता था।भूखे पेट इनके गाने मुझे काले नाग की तरह डसते थे।मेरे हॅास्टल मे ही एक लाइब्रेरी थी,जो रात भर खुली रहती थी।यूनिवर्सिटी के बाद मै वहीं घंटों बैठा रहता था।अपने कमरे मे मै बस सोने आता था।सिरयोजा के मॉ बाप भी अमीर न थे।उसे छात्रवृति के नाम पर बस पैंतीस रूबल मिलते थे।यूनिवर्सिटी के बाद बेचारे के पास बस दो काम होते थे।अपने एकमात्र जीन्स के पैन्ट पर पैबन्द सिलना या फिर पूरे हॅास्टल की खाली बोतलें जमा करना और पास के एक मागासीन मे ले जाकर वापस करना।जो दो चार कोपेक उसे मिलते थे,उससे वो आलू और पावरोटी खरीद लाता था।जब वो ये आलू अपने घर से लाए गाय या सुअर की चर्बी मे भूनता था,तो लैटिन अमेरिका के सारे लड़के फ्लोर पर मंडराने लगते थे।पके पकाए खानो के ये नामवर चोर थे।सिरयोजा पेशाव करने को भी न हिलता था।खाना कमरे मे पहुँचा लेने के बाद वो मुझे बुलाने लाइब्रेरी मे आता था।महीने के पॉच दिन वो मेरे साथ ऐश करता था,फिर बाकी के पच्चीस दिन आलू और रोटी खिलाकर वो मुझे जिन्दा रखता था।

इसी बीच नीना की एक चिट्ठी आई।उसे मास्को के एक टेक्सटाईल के कारखाने मे नौकरी मिल गई है।वो हमेशा के लिए मास्को आ रही है।रहने के लिए उसे कारखाने के ठीक पीछे एक हॅास्टल मे कमरा भी मिल गया था।मुझे ये चन्द दिन वर्षो जैसे लग रहे थे।इन दिनो अनातोले का एक लेडी डॅाक्टर से अफेयर चल रहा था।उसका सारा खाली समय उसी के साथ बीतता था।वैसे भी अनातोले अपने कंजूसी की वजह से मेरा अंतरंग दोस्त कभीं न रहा।उसकी कंजूसी पर नीना भी हॅसती थी।नीना को स्टेशन से लेने मै अकेला ही गया।अनातोले को मै कई बार फोन किया,पर वो फोन पर मिला ही नही।स्टेशन की घड़ी से मै अपनी नजरें एक क्षण के लिए भी न हटा सका।ट्रेन के आने का समय नजदीक आता जा रहा था।मेरी असहजता बढती ही जा रही थी।मास्को मे ठंढक पड़नी शुरू हो गई थी।नीना को देखते ही मै पागल की तरह उसकी ओर दौड़ा और उसके गले जा लगा।उसने मुझे अपने से अलग न किया।वो भी मुझे जकड़ी रही।स्टेशन की भींड़ छट चली थी।मै भी सहज हो चुका था।नीना अपने फर के ओवरकोट मे बड़ी सुन्दर लग रही थी।उसका सूटकेस वाकई बड़ा भारी था।कुछ दूर चलने के बाद उसने अपना सूटकेस ये कहते हुए मेरे हाथो से ले लियाःलाओ मुझे दे दो ये सूटकेस।आलू और रोटी खाते रहते हो।भूखे पेट पढाई लिखाई कैसे कर लेते हो!मैने उसका हैंड बैग अपने कन्धे से लटका लिया,वो भी कम भारी न था।महीने के अन्तिम दिन चल रहे थे।मेरे पास एक फूटी कौड़ी तक न थी।नीना के हॅास्टल तक जाने के लिए हमे बस न लेना पड़ा।उसका हॅास्टल स्पूकिन्सकाया मेट्रो से लगा हुआ था।उसके हॅास्टल के अन्दर मै नही जा सकता था।हॅास्टल के गेट पर उसका हैन्ड बैग देकर मैने उससे विदा लिया।

अगला दिन शुक्रवार था।दोपहर के दो बजे के बाद हमारी कोई क्लास न होती थी।नीना ने ठीक तीन बजे एरमिताज पिक्चर हाल के सामने वाले पार्क मे मिलने का वायदा किया था।उसकी मॉ ने मेरे लिए खाने पीने का काफी सामान भेजा था,जिसे उसने मुझे देना था।

मै दूसरे दिन नीना से मिला।अकारण मै थोडी देर से पहुँचा।नीना एक बैंच पर बैठे मेरा इन्तजार कर रही थी।एक बड़ा सा बैग उसके पैरों के बीच अॅटका पड़ा था।उसने सिर्फ अपना हॅाथ बढाया और अपना बैग मेरे हाथो मे देते हुई बोलीःमै अब चलूँगी।मुझे और भी कुछ जरूरी काम हैं।मै घबराया और हकलाते हुए बोलाःमैने सोचा था कि शायद आज तुम मेरे साथ थोड़ा लम्बा बैठोगी।एकाध घन्टे रूक नही सकोगी!मैने लगभग गिड़गिड़ाते हुए पूछा।

लादना कहके वो बैठ तो गई और मै उसपर प्रश्नो की बौछारे करता रहा।नीना ने जैसे चुप्पी साध ली थी।वो सिर झुकाए अपने जूते से सिर्फ वर्फ कुरेदती रही।

उसने अपना मौन तोड़ाःअब मै चलूँगी।मुझे अपना कमरा भी तो ठीक करना है।सारे सामान यूँ ही बिखरे पड़े हैं।

नीना को मै बस अडे तक पहुँचाने चला।रास्ते भर सोचता रहा,शायद बस अडे पर वो मेरे मफलर ठीक करेगी या फिर मुझे मेरे बालों को बिखराने के लिए शापका उतारने को कहेगी।ऐसा कुछ उसने मुझसे नही कहा।पााका कहके वो बस मे जा घूसी।

मै बड़े व्यथित मन से अपने कमरे मे वापस आया और सिरयोजा के हॅाथ मे नीना का बैग पकड़ा दिया।जब सिरयोजा बैग का सारा सामान एक टेबल पर उड़ेला,तो उसकी ऑखे फटी की फटी रह गई।तरह तरह के प्रिजर्वड मीट,मछलियॉ,मश्रूम्स,सब्जियॉ,जेम्स,जेलियॉ,पनीर और खुद की बनाई वाइनो से पूरा टेबल भरा पड़ा था।मुझे बस एक बात परेशान किए जा रही थी और वो थी नीना का उचटा व्यवहार।

नीना का कोई भी फोन न आया।खैरात देकर वो लापता ही हो गई।अक्सर मै उसके सारे सामानो को डस्टवीन मे फेक देने की सोचता था फिर कुछ सोचकर टाल जाता था।कभीं कभी नीना के हॅास्टल जाने की भी सोचता था,पर मेरा अहम मेरे आड़े आ जाता था।मैने अपना दैनिक क्रम नही बदला,बस रह रह कर मेरा ध्यान बॅट जाता था।उसकी मॉ के दिये सामान ऐसे ही पड़े रहे।

फिर किसी एक शुक्रवार को उसका फोन आया।शनिवार को ग्यारह बजे मुझे अपने हॅास्टल के सामने उससे मिलना था।

हमारे हॅास्टल मे शनिवार और रविवार को लड़कियॉ कमरे मे बुलाई जा सकती थीं।गेट पर उनके पासपोर्ट रख लिए जाते थे।दस बजे रात से पहले उन्हे हॅास्टल छोड़ना पड़ता था।मै ठीक पौने ग्यारह बजे अपने हॅास्टल के सामने जा कर खड़ा हो गया।नीना मेरे लिए बिल्कुल नई फ्रीज लेकर एक टैक्सी से आई और साथ मे खाने पीने का ढेर सा सामान भी।मै और सिरयोजा कमरे के ठीक बीचोबीच अपने कपड़ो की आलमारियॉ खड़ी करके कमरे को दो हिस्सों मे बॅाट चुके थे।हमारा हिस्सा खिड़की की ओर था।दोनो आलमारियों के बीच हम एक पर्दा भी लटका दिए थे।हमारे बेड दीवारों से लगे थे।बेडों के बीच खिड़की से लगी हमारी मेंजे थीं।इसके अलावे हमारे पास दो कुर्सिया थी।मेरे पास सिरहाने की तरफ एक और छोटी सी मेज थी,जिस पर एक म्यूजिक सेट,ऐशट्रे,सिगरेटें,कलम,लिफाफे इत्यादि पड़े रहते थे।हमारे कमरे का ये हिस्सा दूसरे हिस्से की अपेक्षा बेहद साफ सूथरा और व्यवस्थित था।

नीना के साथ मै फ्रीज उठाकर अपने कमरे तक लाया।सिरयोजा लाख मना करने पर भी दो चार घंटो का बहाना बना कर कहीं सरक लिया।नीना अपने लाए खाने पीने का सामान सुरूचिपूर्वक फ्रीज मे सजाने लगी।फ्रीज दूध,मक्खन,अंडे,बीफ,चर्बियों,पनीर,आलू,टमाटर,खीरा,डवलरोटी,फलों से

खचाखचा भर चला था। नीना साधिकार अब मेरे कपड़े की आलमारी ठीक किये जा रही थी। मेरे हिस्से का कमरा अब चमक रहा था। मेरे मेज पर एक धुली जेली के बोतल मे चार टयूलिप्स के फूल बड़े ही सुन्दर लग रहे थे। अब नीना ने अपना मौन तोड़ाःमुझे किसी का इन्तजार करना बिल्कुल अच्छा नही लगता है। तुम इसका ख्याल रखना। मेरे की पर्श मे वो फ्रीज की चाभी लगाते हुए बोलीःपन्याल्!

ःदा दा।

अब मुझे एरमिताज के पार्क मे अपने देर से जाने के एवज मे उसके द्वारा दी गई सजा का पता लगा।

मेरे पास बर्त्तन वगैरह कुछ नही था. पर नीना खाना बनाने की जिद करने लगी। मेरे पास पैसे भी नही थे. वरना मै उसे क्रासनीय प्लोसाज पर पिल्मीनि खिलाने ले जाता। सिरयोजा के पास बर्त्तन वगैरह थे. जो हमेशा धूले चमकते रहते थे। नीना के साथ मै भी ज्वाइन्ट कीचन मे साथ गया। नीना आलू. बीफ व चर्बी की एक सूप बनाई। उसे लिये हम अपने कमरे मे आये। मै मेज साफ करके एक कुर्सी पर जा बैठा। नीना मेज सजा रही थी। एक प्लेट मे प्रिजर्व्ड छोटी छोटी मछलियों और प्याज के हरे हरे पत्तों की सलाद. दूसरे प्लेट मे पावरोटी के टुकड़े. बीच मे सूप की देगची। मास्को के पन्द्रह महीनो मे इससे अच्छा खाना मैने पहले कभी न खाया था। उसने मुझे पीने के लिए अपनी माँ के हॅाथो बनाई हुई वाईन भी दी. जो मेरे गले से उतरकर मेरी अंतड़िया जलाती हुई मेरे होशोहवाश से ही खेलने लगी।

अब प्रारम्भ हुआ मास्को मे मेरा पुर्नजीवन। सिरयोजा ने भी बोतलें इकठ्ठा करना बन्द कर दिया। सप्ताह मे पॅाच दिन शाम का खाना वही बनाता था। मै बस फ्रीज खोलकर उसे सामान भर दे देता था। शनिवार और रविवार का खाना नीना ही बनाती थी। मेरा फ्रीज खाने पीने के सामानो से भरा रहता था। नीना से मै रोज ही मिलता था. भले ही कुछ देर के लिए ही सही। हर महीने अपने स्कालरशीप से मै उसके लिए कोई न कोई पदारक अवश्य ही खरीदता था। मेरे बाकी खर्चे वही उठाती थी। खाने पीने के अलावे सिनेमा. रेस्तरां. कपड़े लत्ते ये सब उसी के जिम्मे था। रविवार को वो मेरे पूरे सप्ताह के गन्दे कपड़े ढो कर अपने हॅास्टल ले जाती थी. और दो दिनो के बाद उन्हे धो कर आयरन करके मुझे वापस दे जाती थी। अनातोले मुझसे जब भी मिलता था. बस यही पूछता थाःमेरी बहन तुम्हारा ख्याल ठीक ठाक से रखती तो है न!खुश तो हो उसके साथ!मै अगर उसका भाई न होता. तो कब का उससे व्याह कर लिया होता। बड़ी घरेलू लड़की है। तुम्हे अपनी हॅथेलियों पर रखेगी।

ःविल्याचः

नीना की नौकरी भी आसान नही थी। कभी कभी उसे बारह घंटे मशीनो पर खड़ा रहना पड़ता था। उसे महीने मे अपने काम के चार से पॅाच सौ रूबल्स मिलते थे। अपनी तमाम थकावटों के बावजूद वो मुझसे रोज ही मिलने आती थी। कभी कभी मुझे लगता था जैसे वो सिर्फ मेरे लिए ही पैसे कमाने जाती है। एक क्रम उसने अन्तिम दिन तक न तोड़ा. मिलने पर मेरा मफलर ठीक करके मेरे बाल बिखरा देना और फिर मेरा पर्स चेक करना। पैसे वैसे के लिए उसने मुझे कभी नही टोका।

मेरे दोस्तो मै एक प्रणव बनर्जी था. जो चोरी के डर से अपना पावरोटी और मक्खन तक सूटकेस मे बन्द करके रखता था। एक वही था. जिसके पास महीने के अन्तिम दिन तक खाने पीने के नाम पर कुछ न कुछ होता था। मेरी ही तरह फक्कड़ मेरा एक और दोस्त था. अनिल भार्गव। महीने की दसवी तारीख के बाद भूख की वजह से दीवारो का सहारा लेकर टवायलेट जाता था। मुझे देखते ही गिड़गिड़ाने लग पड़ता थाःइस गरीब पंडित के लिए तुम्हारे पास तनिक भी दया माया नही है प्रमोद!मै उससे मजाक मे कहता था ःभार्गव मेर कमरे मे शाकाहारी खाना नही बनता। वो झल्ला पड़ता थाःमारो गोली शाकाहारी खाने को। अरे कुत्ता बिल्ली गदहा ऊँट किसी का मीट ही सही. तुम्हारे कपड़े वाली आलमारी पर तीन बार नॅाक करूँगा। ना मत बोलना. वरना मेरी अर्थी तुम्हे ही ढोकर वोल्गा नदी मे फेकनी पड़ेगी। ब्रम्हहत्या का पाप तुम्हारे सर पर चढेगा।

मै जब उससे ये कहता था कि पंडित मै तुम्हारी जात नही बिगाड़ना चाहता. तब वो ब्रेजनेव की मॅा बहन शुरू कर देता था। सिरयोजा को वो मेरा नौकर कहता था। खा पी कर जाने से पहले वो हमेशा पूछता था कि ये जो देवी है. जिसकी तुम पर अपार कृपा है. उनकी अगर कोई अपनी सगी बहन नही है. तो कोई चचेरी या मौसेरी बहन तो होगी। मेरा कल्याण भी बस सलायेवा परिवार के हॅाथो ही सम्भव है।

नीना का पूरा नाम नीना माक्सिमोवना सलायेवा था। उसके पिता का नाम माक्सिम था। एक बार उन्हे हृदय का दौरा पड़ा। बड़ी मुश्किल से उनकी जान बची। नीना के छोटे भाई शाशा का टेलीग्राम आया था। मेरी छुट्टियॅा चल रही थी। नीना अपने काम से ही मुझे फोन की। मै भी साथ चलने को तैयार हो गया। गोकि मुझे इस रिपब्लिक के लिए वीसा चाहिये था. पर इन सब बातों के लिए मेरे पास समय बिल्कुल न था। नीना स्टेशन रिजर्वेशन के लिए जा रही थी। मैने उसे अपने रिजर्वेशन के लिए भी कह दिया। नीना डर रही थी. पर मैने भी नीना को समझा दिया. कन्ट्रोल करने कोई आ भी गया. तो मै अपना मुॅह पलतो के कालर मे छुपा लूॅगा और तुम मेरा सिर अपने गोद मे ले कर उस गदहे से कह देना कि मेरा पति सो रहा है। गहरी नीद मे है। या फिर अनातोले कह देगा. मेरे जीजाजी सो रहे हैं।

दूसरे दिन ठीक नौ बजे सुबह हमारी ट्रेन थी। तेरह घंटे की निर्विघ्न यात्रा करके हम कनाश पहुॅचे। स्टेशन पर हमे लेने शाशा आया था। पूरा कनाश बर्फ की मोटी परतों से ढॅका पड़ा सो रहा था। यहॅा न मास्को की तरह भागा दौड़ी थी और न चूधियाती रोशनियॅा ही थीं। एक अजीब सी शान्ति यहॅा व्याप्त थी। नीना की बड़ी बहन श्वेता कनाश मे ही रहती थी। वो विवाहिता और दो बेटियो की मॅा थी। उसके पति का नाम अलेक्सई था। हम उन्ही के पास गए। श्वेता और अलेक्सई मुझसे बड़े प्यार से मिले। अस्पताल के लिए काफी देर हो चुकी थी। हम सभी को एक रात अब इन्ही के साथ बितानी थी। मकान बेहद छोटा था। उसमे सिर्फ ढाई कमरे थे। गई रात तक हम एक छोटे से रसोई घर मे श्वेता का बनाया सूप और उसके हॅाथो की बनाई रोटी खाते रहे। एक बड़े से पैन मे वो ढेर सा आलू भी भून रखी थी। दो मुर्गे भी वो ग्रील की थी। उसे अपने भाईयों के खुराकों का पता था। अलेक्सई वोदका की बोतल लिए यमराज की तरह मेरे सर पर सवार रहता था। खुद वो अपने पैरों पर खड़े होने की हालत मे न था. लेकिन उसका दवाय दवाय बन्द होने का नाम ही नही लेता था।

इस पूरे परिवार को आडम्बर और दिखावा छू तक नही पाया था। मैने अपने को एक पल के लिए भी विदेशी महसूस न किया। मुझे ऐसा लग रहा था. जैसे मै अपने ही भाई बहनो के बीच बैठा हूॅ। अलेक्सई जब भी मेरा ग्लास भरता था. मुझे एक बार नीना की ओर देखना पड़ जाता था। जब उसकी हॅा होती थी. तभी मै ग्लास उठाता था। धीरे धीरे मुझे अपना ग्लास ग्लास नही लोटा दिख रहा था। डर से मै टवायलेट के लिए भी नही उठ रहा था कि

कहीं मै वहॉ गिर कर ढेर न हो जाऊॅ।पता नही कब नीना मेरे ग्लास पर अपना हॉथ रखकर अलेक्सई को मना की और मुझे सोफे तक पहुॅचा आई।
सुबह जब मेरी नींद खुली.तब मैने देखा अनातोले शाशा और अलेक्सई जमीन पर एक दूसरे पर अपना हॉथ पैर फैलाए सो रहे हैं।मुझे बड़ी जोरों की प्यास लग रही थी।अपनी अन्तिम हिम्मत जुटा कर मै उठा और रसोई की तरफ बढा ही था.कि नीना जग पड़ी और भागी आई।नीना को मै पहली बार एक नाइट गाऊन मे देखा।वो मुझे सहारा देकर रसोई तक ले गई और मुझे पीने को बेरी की शर्बत दी और खुद भी एक ग्लास लेकर मेरे सामने बैठ गई।सफेद और नीले रंग नीना पर बड़े फवते थे।अब तक मैने उसे सिर्फ बन्द गले की ब्लाउजों मे ही देखा था।आज मै उसे पहली बार एक खुले गले के गाऊन मे देख रहा था।एक अजीब सी अनुभूति मुझे अन्दर तक सिहरा गई.जिससे इससे पहले मेरा परिचय न हो पाया था।
दस बजे के आसपास हम सभी अस्पताल पहुॅचे।नीना के पिताजी एक इन्टेन्सिव वार्ड मे थे।बहुत ज्यादा उन्हे बोलने चालने की मनाही थी।मै एक घंटे के करीब इस वार्ड मे रहा।रह रह कर नीना के पिता की ऑखे भर जाया करती थी।एकाध बार तो मै भी उठकर अपने रुमाल से उनकी ऑखे और नाक साफ किया।वो मेरे लिए पराये नही थे और न मै इस परिवार के लिए पराया था।बड़े बोझिल मन से मैने अस्पताल छोड़ा।इस तरह के मौकों पर मुझे घर की बड़ी याद आती थी।
तीन बजे हमे असानोवा की बस लेनी थी।नीना मुझे अपना छोटा सा शहर कनाश दिखाती रही।कनाश के लोग मुझे बड़े उन्मुक्त.सहज और स्थिर लगे।इन तमाम वर्षो के बाद कनाश के चौक.उसकी गलियॉ.वहॉ की दुकाने तो मुझे याद न रही.पर कई चेहरे मुझे आज तक याद हैं।मुझे शहरों मे उन दिनों भी उतनी ही कम दिलचस्पी थी.जितनी आज है।मुझे लोग अच्छे लगते हैं और वही मुझे किसी गॉव.शहर या देश से जोड़ते हैं।
अनातोले और शाशा कनाश मे ही रह गए।मै नीना के साथ उसके गॉव असानोवा चला आया.जहॉ मेरी मुलाकात नीना की मॉ से हुई।वो एक किसान औरत थीं।बड़ा गठीला बदन था उनका।चौड़े कन्धे.खुरदुरी हॉथे.पर उनकी ऑखे बड़ी ममतामयी थीं।एक लाल रंग का ब्लाऊज.एक लम्बा सा गन्दा मटमैला स्कर्ट.आधी बॉह की स्वेटर और एक चारखाना एप्रन पहने वो अपने बाड़े मे हमारा इन्तजार कर रही थीं।मुझसे गले मिलने के बाद जब वो मुझे अपने साथ लेकर घर की तरफ बढीं.तो मै देख रहा था.कि उन्हे चलने मे परेशानी हो रही है।उन्होने खुद ही बताया कि उनके गठिये का दर्द थोड़ा बढ गया है।उन्हे जब मै मामूसका कहके पुकारता था.तो वो ममत्व मे नहा सी जाती थीं।एक बार नीना से उन्होने ये भी कहा था कि ये लड़का मेरे दिल मे बस सा गया है।इसके जाने के बाद मुझे इसकी बड़ी याद आएगी।वो मेरे पास ही क्यों नही रह जाता!
असानोवा की आबादी यही शायद दो हजार के आसपास रही होगी।गॉव के चारो ओर विस्तृत फैले खेत थे.जो बर्फ से ढॅके पड़े थे।नीना के मॉ बाप का घर पॉच कमरों का था.जो अन्दर से बेहद साफ सूथरा और आरामदेह था।सारे कमरे पुराने ढंग के फर्नीचरों से सजे हुए थे।खिड़की दरवाजों पर नीना के मॉ के हॉथों सिले रंग बिरंगे पर्दे लटक रहे थे।लकड़ी के फर्श पर यहॉ वहॉ ऊनी दरियॉ फैली हुई थी।कामीन हर कमरे मे थी.जिनकी आग कभीं नही बुझती थी।रसोईघर मे एक लोहे का बड़ा सा ओवन था।उसमे भी चौबीस घंटे लकड़ियॉ जलती रहती थीं।इस ओवन पर न सिर्फ खाना बनता था.वरन खाने पीने और नहाने के लिए बड़े बड़े देगचियों मे बर्फ भी पिघलाए जाते थे।एक तौलिया भिंगोकर फिर उसे निचोड़कर सारे बदन पर फेर लेना ही ठंढ के दिनो मे असानोवा मे नहाना कहलाता था।मुझे असानोवा का जीवन बड़ा कठिन लगा।खिड़कियॉ चौबीस घंटें बन्द ही रहती थीं।ठंढ हवा की कहीं से भी अन्दर आने की गुंजायश न होती थी.फिर भी मै कांपता ही रहता था।घर के बिस्तर भी गद्देदार और मोटे थे.फिर भी मुझे रात भर कंपकंपी ही लगी रहती थी।घर से बाहर मै निकलता ही न था।कभीं कभार मै घर से ही सटे एक बड़े से लकड़ी के जर्जर हॉल मे जाता था.जो मवेशियो के लिए था.जिसका एक भाग सूखे घासों और दूसरे चारों और लकड़ियो से भरा पड़ा था।मवेशियो के नाम पर इस परिवार के पास दस बछड़े.तीस से भी ऊपर सुअर और सैकड़ो मुर्गे मुर्गियॉ थीं।
असानोवा की बर्फे बस दो महीने ही वहॉ की जमीनें अपने से मुक्त करती थीं.जिनमे वहॉ के लोगों को अगले दस महीने के लिए वो सबकुछ जमा करना पड़ता था.जो वो कर सकते थे।वहॉ के खेत जौ.मक्के.आलू.खीरा टमाटर.पातगोभी गाठगोभी शलजम प्याज और तरह तरह के सलादों से लहलहा उठते थे।
नीना के यहॉ चाय काफी का रिवाज ही न था।पीने के लिए दूध.तरह तरह की बेरियों के शर्बत.सेव और नासपाती की स्वयम बनाई गई वाईने या फिर आलू से बनाई हुई स्प्रीट।चौथा पेय मुझे वहॉ न दिखा।खाने पर मुझे प्रायः हर दिन हडियों का सूप.चर्बियों मे भूनी बीफ.उबले आलू.घर की बनी रोटी.और साथ मे सिरकों मे डूबी दसों प्रकार की सब्जियॉ मिलती थीं।मसाले के नाम पर इस परिवार मे बस नमक और काली मिर्च थी।खाने पीने का यहॉ कोई निर्धारित समय न था।रसोईघर की मेज खानो से भरी ही रहती थी।
छ बजे के बाद असानोवा मे एक धूप्प अॅधेरा घहरा जाता था।नीना की मॉ मेरे कमरे मे आकर मेरा हालचाल पूछपाछ कर मेरे ललाट चूम जाती थीं.पर नीना रसोईघर के काम निबटाती रहती थी।पता नही ये दोनो सुबह कब जग जाते थे!मै जब भी घर से बाहर निकलता था.इन दोनो को कामो मे व्यस्त पाता था।इन्हे ठंढ भी नही लगती थी।मै दिन भर रसोई मे बैठा वाइन की जग खाली करता रहता था।जब नीना की मॉ सोने चली जाती थी.तब मै नीना से आलू की स्प्रीट भी पा लेता था.फिर उससे हल्के फूलके मजाक करता था।
नीना ने अपने और मेरे बीच एक सीमा निर्धारित कर दी थी.जिसे मैने कभी भी नही तोड़ा।दूसरे शब्दो मे नीना ने मुझे उसे तोड़ने नही दिया।उसे पत्नीत्व चाहिये था।मै इससे कतराता रहा।उसे ज्वार भाटों से बड़ी नफरत थी।उसे एक शास्वत धारा की तलाश थी.जो वो मुझमे और मेरे समीप ढूॅढ रही थी।
रसोई का काम निपटा कर वो मेरा बिस्तर ठीक करने आती थी।मुझे बिस्तर पर लिटाकर मेरे गर्दन तक रजाई खींच देती थी और स्वयम एक बगल की कुर्सी खींचकर बैठ जाती थी।फिर हम यहॉ वहॉ की बातों मे खो जाते थे।वो मेरा कमरा तभी छोड़ती थी.जब मै सो जाता था।
असानोवा मे मै तीन दिन रहा।नीना को सुबह से शाम तक एक पल की भी फुर्सत न थी।इन तमाम वर्षो के कठिन परिश्रमो ने उसके शरीर को काफी मजबूत और कसा सा बना दिया था.फिर भी उसका स्पर्श.उसका सौन्दर्य.उसकी ऑखो की दीप्ति.उसकी लज्जा.उसकी हॅसी मुस्कान.उसका संपूर्ण नारीत्व अप्रभावित था।वो बस स्कूल के बाद अपनी पढाई जारी न रख सकी.और कनाश मे एक कपड़े के कारखाने मे नौकरी करने लगी।उसके पिता भी कनाश के ही एक फैक्ट्री मे काम करते थे।बाकी समयो मे वो अपने मॉ के कामों मे हॉथ बॅटाती थी।घर गृहस्थी के अलावे उसके पास दूसरा कोई

शौक था ही नही।
उसे मैने हजारों बार कुरेदा.पर मुझे उसके एक भी अफेयर का पता न लग पाया।अक्सर मै सोचा करता था कि वो कनाश की नौकरी आखिर क्यों छोड़ी!मास्को मे वो क्या ढूंढने आई है!उसका सारा समय तो मेरे ही संग बीतता है।मै अपनी मॉ के बारे मे अक्सर उससे बातें करता था.और उसे ये भी बताता रहता था.कि मेरी मॉ बड़ी संकुचित स्वभाव की हैं।वो मेरे शादी ब्याह के सपने अहर्निश देखती रहती हैं।मै अपनी मॉ का दिल नही तोड़ सकता।अपनी पढाई खत्म करके मै वापस चला जाऊँगा।परन्तु न तो उसकी उदारता कम हुई.न उसका सेवा भाव।उसके मन के भाव उदासी खुशी मे ढलते ही नही थे।उसे मैने कभीं असंतुलित पाया ही नही।
एक बार मैने उससे स्पष्ट पूछा भी थाःनीना तुम मुझसे कौन सा प्रतिदान चाहती हो!मै भी तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ!
ःतुम मुझसे रोज मिलने तो आते ही हो।यही उसका जवाव होता था।
एक समर्पिता की तरह वो मेरी सेवा मे लगी रहती थी।जहॉ तक सानिध्यता की बात है.मुझे अच्छी तरह याद है कि कई बार भीषण ठंढ मे उसने मुझे अपने फर वाले ओवरकोट के सारे बटन खोलकर अपने वक्ष मे छुपाया था।मैने कई बार उसे पीछे से कमर से पकड़ा भी था।एकाध बार थोड़ी दूरी रखकर वो मेरे साथ एक ही विस्तर पर लेटी भी थी।मै उसकी बॉहों पर न जाने कितनी बार सोया भी था।
वो इकतीस दिसम्बर को पैदा हुई थी।उसका जन्मदिन और सिलवेस्टर मै एक साथ मनाता था।एम्वेसी से मिले डेढ सौ डालर मै इस दिन के लिए बचा कर रखता था।दवा कर शैम्पेन और व्हिस्की की बोतलें खुलती थी।मेरा और सिरयोजा के हिस्से का कमरा मेहमानो से खचाखच भरा रहता था।खाने पीने का पूरा इन्तजाम सिरयोजा के हॉथो मे रहता था।इकतीस दिसम्बर के सुवह आठ बजे से लेकर दूसरे दिन दस बजे रात तक हमारे कमरे मे धूम धड़ाके मचते थे।मेरा कमरा टयूलिप्स के फूलों और पदारकों से भर जाता था।मै भी नशे मे बस एक ही गाना गाता थाःनीना तुम्हारे प्यार मे क्या क्या न वन गया हूँ !क्या क्या बनना चाहा था शैतान बन गया हूँ नीना।नीना मेरे इस गाने पर बड़ी खिलखिलाती थी और इश्यो राज इश्यो राज कहके फिर से ये गाना सुनना चाहती थी।मै फिर मुँह से तवला बजा बजा कर ये गाना शुरू कर देता था।
फिर अकस्मात मेरे जीवन मे आलवीना आई और मुझे नीना से दूर खींच ले गई।नीना का जन्मदिन मै बस तीन बार ही मना सका।
सौन्दर्य और समर्पण के बीच मेरे द्वारा लिया गया ये फैसला मेरे जीवन के भयंकर भूलों मे एक भूल था.जो समय के साथ मेरे सामने स्पष्ट और स्पष्टतर होता चला गया।मै उन दिनो चौबीस वर्ष का था।मुझमे न चरित्र था न साहस।नपुंसक था मै।विना नीना को कुछ बताए मै अपने हॉस्टल से गायब हो गया.और प्रिअबराजेन्स्की प्लोसाज मे आलवीना के घर आ बसा।हरी ऑखे.लम्वे कमर तक घूँघराले बाल.मुस्कराने पर उसके गालों मे पड़ने वाले गढे .कुछ सोचने पर उसकी कमानीदार भवों का मिलना.यही थी आलवीना.जिसे मै आला कहके पुकारता था।आलवीना मेरे जीवन की सबसे वड़ी मल्लिका आज भी है।ये सौन्दर्य मुझे अपने जीवन मे दुवारा नही टकराया।
सिरयोजा उन दिनो अपने मॉ बाप से मिलने गया हुआ था।मैने अपना नया पता और टेलीफोन नम्बर किसी को भी नही दिया।एक दिन अचानक मुझसे यूनिवर्सिटी मे मुझसे सिरयोजा टकरा गया।उसी से मुझे पता चला कि नीना के फोन मुझे महीने भर रोज ही आते रहे.फिर पता नही क्या सोचकर उसने फोन करना वन्द कर दिया।एक बार वो सिरयोजा से शहर मे टकरा गई थी.पर उसने मेरा कोई प्रसन्ग न उठाया।सिर्फ उसके ही हाल चाल पूछती रही।अन्त मे वस सिरयोजा ने मुझसे इतना ही कहाःमै तुम्हारी नई सहेली को नही जानता हूँ.पर तुम्हे नीना को इस तरह नही छोड़ना था।मै तुम्हारा पता और टेलीफोन नम्बर नही चाहता हूँ।तुम नीना से मिलकर उसे अपनी सारी करतूतें वता दो।वो तुम्हे माफ कर देगी।प्रमोद!किसी के प्यार की इस तरह अवहेलना नही की जाती है।तुम एक अच्छे इन्सान हो।तुमसे एक गलती हो गई है।उसे स्वीकार लो।इसी मे तुम्हारी भलाई है।वरना तुम आजीवन पछताओगे।
मास्को के आखिरी तीन वर्ष मै आलवीना के परिवार मे रहा।ऐसा भी नही था.कि मुझे नीना की याद न आती हो।मै सिर्फ इस परिवार मे आने के बाद इतना वॅध गया था.कि नीना पीछे छूटती ही चली गई।इसी तरह महीनों गुजर गए।फिर एक दिन वस मे अचानक नीना टकरा गई।पता नही.उस शाम उसपर क्या बीती होगी!
समय अपनी धूरी पर नाचता रहा।अब मेरे भाग्य को अपना निर्णय लेना था.जो मेरे पीठ पीछे पता नही कब से ठहाके लगा रहा था।आलवीना ने अपने ही हॉथो मेरे भविष्य वाली रेखा कुछ ज्यादे ही तिरछी कर दी।एक बड़े ही निर्णायक क्षण में मैने सदा के लिए मास्को छोड़ देने का निर्णय ले लिया।
अचानक मुझे नीना की याद आई।उससे बगैर मिले मै मास्को छोड़ना नही चाहता था।मैने उसके काम पर फोन किया।वहॉ से मुझे पता चला कि वो अब उस फैक्ट्री मे काम नही करती है।अनातोले का नया टेलीफोन नम्बर मेरे पास नही था।उसने इस दरम्यान अपने लेडी डाक्टर से शादी कर ली थी।उसका पता मै न लगा पाया।मेरे पास दूसरा विकल्प नही था।न चाहते हुए भी मैने नीना के ताऊ का फोन डायल किया।मेरी किस्मत अच्छी थी कि टेलीफोन पर नीना की ताई मिली।उन्ही से मुझे नीना का नया फोन नम्बर मिला।
टेलीफोन पर नीना उतनी ही सहज और आत्मीय थी।दूसरे दिन रात के ग्यारह बजे मेरी मास्को से भारत की उड़ान थी।मैने अपने सारे सामान आलवीना के यहॉ छोड़ दिये थे।मेरे पास बस एक छोटा सा ब्रीफकेस था.जिसमे मेरे सारे जरूरी कागजात थे।नीना से मै ठीक तीन बजे एरमिताज के सामने वाले पार्क मे मिला।गले मिलने के बाद उसने मेरा मफलर ठीक किया और मेरे शापके को घूरा।उसे मेरे बाल बिखराने थे।मैने अपना शापका उतार दिया।फिर हम एक बैंच पर जा बैठे।हमारे बीच का मौन बस उसके ही प्रश्नों से टूटता थाःकैसे हो!.डिप्लोम मे तुम्हे कौन से नोटस मिले.मॉ कैसी हैं घर पर चिट्ठी डालते रहते हो.घर से चिट्ठी आती रहती है.ये दाढी क्यों बढा रखी है इत्यादि इत्यादियॉ।मै अपनी नजरें झुकाये जूते से बर्फ कूरेदता रहा।
बड़ी हिम्मत करके मैने उसे सदा के लिए अपने भारत वापस लौटने का निर्णय सुनाया।मेरी उंगलियों पर उसकी उंगलियों की पकड़ ढीली पड़ गई।फिर हमारे बीच एक सन्नाटा सा छा गया।नीना चाहकर भी अपनी सिसकियॉ न रोक पा रही थी।वो अपना सिर एक ओर कर के बस रोये जा रही थी।रह रहकर वो च्योर्त्त च्योर्त्तकहके अपने ऑसुओं को कोसती थी.जो अब उसके वश मे न थे।

जब वो थोड़ा सहज हुई. तो इतना ही पूछीःतुम्हारी फ्लाईट कब है!
ःआज ही।ग्यारह बजे।मेरी आवाज भर्रा गई. फिर भी मै इतना कह ही गयाःनीना अगर हो सके तो मुझे माफ कर देना।मुझे अपने किये की सजा मिलेगी ही. जिसे मै अपने सर ऑखो पर रखकर भुगत लूँगा।तुम्हे मै कुछ नही दे पाया. पर आजीवन तुम्हारे लिए कामना करता रहूँगा।मैने जो बर्त्ताव तुम्हारे साथ किया. वो मुजे आजीवन धिक्कारेगा।
पॉच बजने को आए थे।ठंढ बढ चली थी।हम पास के ही छोटे से रेस्तरां मे जा बैठे।नीना एयरपोर्ट साथ चलने की जिद़ कर रही थी।बड़ी मुश्किल से मै उसे मना कर पाया।समय सरकता जा रहा था।उसे मैने अपने घर का पता लिखवाया. उसके चिट्ठियों का तत्काल जवाब देने का वायदा किया।मै उसे आश्वासन पर आश्वासन दिये जा रहा था. और मै उससे सिर्फ लादना सुने जा रहा था।मुझे ऐसा लग रहा था. जैसे उसका सारा विश्वास मेरे प्रति मर चुका हो।उसे बस अपना दायित्व अन्त तक निभाना था।वो इसे निभा भी रही थी।ःसदैव खुश रहना।तुम्हारी खुशी मे ही मेरी खुशी है पागल।
ठीक पौने सात बजे हम एक टैक्सी स्टैंड पर जा पहुॅचे।नीना से गले मिलकर मै टैक्सी मे बैठने ही वाला था. कि वो पूछीःतुम्हारे पास पैसे तो है न!मेरी ऑखे नम हो चलीं।टैक्सी डॉक्टर वागीरोवना के घर की ओर दौड़ पड़ी।आगे वाला मोड़ हालॉकि काफी दूर था. पर मुझमे इतनी भी हिम्मत न थी. कि मै टैक्सी के पिछले शीशे की नमी साफ करता और नीना को अपनी ऑखो से ओझल होते देखता।
मेरे जीवन का ये अध्याय अपनी अन्तिम पृष्ठ पर था।
दो तीन वर्षो के अन्तराल और भटकाव के बाद सहज होते ही मैने नीना को लिखा।मुझे याद तो नही है कि इन पिछले बारह वर्षो मे मैने उसे कितने पत्र लिखे!उसे सारे पत्र मै असानोवा के पते पर भेजता रहा. पर मेरे पास एक का भी जवाब नही आया।अपने हर पत्र मे मै आज तक सिर्फ यही गिडगिड़ाता रहता हूँ कि वो मुझे माफ कर दे।न सिर्फ उससे. वल्कि अपने ईश्वर से भी।न जाने असानोवा की गृहस्थी किसके हॅाथो मे है!मेरे पत्र नीना तक क्यों नही पहुॅच पाते हैं! या फिर नीना मेरे पत्रो का जवाब क्यों नही देती है!वो कहॉ है. क्या कर रही है! बिना इसे जाने मै इस अध्याय को बन्द नही कर सकता।
मेरे जीवन मे बाद के दिनो मे मुझे आलवीना के कई विकल्प टकराये. पर नीना का विकल्प शायद था ही नही या है ही नही।उसके सन्दर्भ मे मुझे ये नही कहना था कि कोई भी अपनापन स्वार्थरहित नही होता है।मै निस्संदेह गलत था।ये सिर्फ मैने आलवीना का मन रखने के लिए कह दिया था।
पता नही मै अपने जीवन मे क्या ढूँढ रहा था!या एक साथ बहुत कुछ ढूँढ रहा थ!या फिर कुछ भी नही ढूँढ रहा था।

प्रमोद कुमार सिंह